# आर्थिक मोर्चे पर बड़ी चुनौती

**जैसा कि उस अवधि के इससे पहले आए अन्य आंकड़े दर्शाते रहे हैं, ये आंकड़े भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि देश ने बीच में मिली जरा सी मोहलत का फायदा उठाते हुए हालात काफी हद तक दुरुस्त कर लिए थे। दूसरी लहर ने उसे फिर से बिगाड़ा।**

सुमन वर्मा।।

नैशनल स्टैटिस्टिक ऑफिस (एनएसओ) की ओर से पीरियॉडिक लेबर फोर्स सर्वे (पीएलएफएस) की ताजा रिपोर्ट इस लिहाज से भी अहम है कि यह देश में कुछ समय के अंतर पर पैदा हुए दो असामान्य हालात के नतीजों को करीब से देखने और समझने का मौका मुहैया कराती है।

जारी हुई इस रिपोर्ट के मुताबिक अप्रैल से जून 2021 की तिमाही में शहरी इलाकों में 15 साल और उससे ऊपर की आबादी में बेरोजगारी की दर 12.6 फीसदी पाई गई। अगर एक साल पहले की उसी अवधि के आंकड़े देखें तो यह दर 20.8 फीसदी थी, मगर अप्रैल–जून से ठीक पहले की तिमाही यानी जनवरी से मार्च 2021 की अवधि में यह दर 9.3 फीसदी पर आ गई थी। आंकड़ों का ग्राफ ऊपर से नीचे आने और फिर दोबारा चढ़ने का यह ट्रेंड रिपोर्ट के अन्य हिस्सों में भी दिखता है। उदाहरण के लिए, शहरी महिलाओं की स्थिति देखें तो 15 साल और उससे ऊपर की आबादी में बेरोजगारी की जो दर अप्रैल से जून 2020 में 21.1 फीसदी थी, वह जनवरी–मार्च 2021 में घटकर 11.8 फीसदी पर आई और अप्रैल–जून 2021 की अवधि में फिर बढ़कर 14.3 फीसदी पर चली गई।

ध्यान देने की बात यह है कि अप्रैल–जून 2020 ही वह अवधि थी, जब कोरोना के वैश्विक प्रकोप से जुड़ी आशंकाओं के मद्देनजर केंद्र सरकार ने सबसे लंबे देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की थी। स्वाभाविक ही उसके कारण बेरोजगारी दर में अप्रत्याशित इजाफा हुआ। इसके ठीक एक साल बाद यानी अप्रैल–जून 2021 की अवधि में देश कोरोना की दूसरी लहर के कहर से जूझ रहा था। इसका भी असर जीवन के सभी क्षेत्रों पर पड़ा और खासतौर पर बेरोजगारी में जबर्दस्त बढ़ोतरी देखी गई। मगर ये आंकड़े भारतीय समाज की जिजीविषा का भी संकेत करते हैं। जैसा कि उस अवधि के इससे पहले आए अन्य आंकड़े दर्शाते रहे हैं, ये आंकड़े भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि देश ने बीच में मिली जरा सी मोहलत का फायदा उठाते हुए हालात काफी हद तक दुरुस्त कर लिए थे। दूसरी लहर ने उसे फिर से बिगाड़ा। लेकिन इस दूसरी लहर के बाद फिर से स्थितियां सामान्य होने लगीं और जैसे–जैसे कोरोना से जुड़े प्रतिबंध हटते गए, आर्थिक गतिविधियां भी तेज हुईं। इसका असर आगे आने वाले आंकड़ों पर दिखेगा। मगर इसी बीच रूस और यूक्रेन युद्ध के रूप में एक नई असाधारण चुनौती अर्थव्यवस्था के सामने आ गई है। बहरहाल, चुनौतियां तो रूप बदल–बदल कर आती ही रहेंगी, लेकिन फिलहाल सरकार के सामने महंगाई दर को यथासंभव काबू में रखते हुए रोजगार के अधिक से अधिक मौके मुहैया कराने की कठिन चुनौती बनी हुई है। मौजूदा हालात में इसका जवाब जहां तक हो सके सरकारी खर्च के जरिए अर्थव्यवस्था को गति देने का प्रयास ही हो सकता है। इसीलिए बजट में सरकार ने कैपिटल एक्सपेंडिचर में भारी बढ़ोतरी का प्रस्ताव रखा था।

## मंदिर के दर्शन

धर्म-दर्शन



**अशोक वोहरा।** पौराणिक मान्यताओं के अनुसार काठगढ़ मंदिर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के अनुज भ्राता भरत को अत्यंत प्रिय था। यही नहीं इसे उनकी आराध्य स्थली भी कहा जाता है। ग्रंथों के अनुसार भरत जी जब भी अपने ननिहाल कैकेय देश जाते तो इस मंदिर के दर्शन जरूर करते। इसके अलावा जब कभी उन्हें मौका मिलता तो भी इस स्थान पर भोलेनाथ और माता पार्वती की पूजा करने आते थे। शास्त्रों के अनुसार शाम के समय कौन से काम नहीं करने चाहिए। हिन्दू शास्त्र और धर्मग्रंथ आज के समय में भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने पहले कभी हुआ करते थे। हां, आज की पीढ़ी इन्हें अपने जीवन में स्थान देना, इनमें लिखे आदर्शों और सिद्धांतों को अपने जीवन में ढालना भूल गई है लेकिन इसका ये अर्थ कदापि नहीं है कि ये वैदिक धर्म की धरोहर माने जाने वाले ये शास्त्र अपना औचित्य गवां चुके हैं।

## संपादकीय

### मौसम बदलने का संकेत

दो राय नहीं कि बीते कुछ समय में दोनों देशों के बीच बहुत कुछ ऐसा घटित हुआ है जो द्विपक्षीय संबंधों और विश्वास बहाली के नजरिए से ही नहीं, श्रीलंका में भारत की साख मजबूत करने के लिहाज से भी अहम है। फ्लोटिंग डॉक और डोर्नियर टोही विमान जैसे मुद्दों पर बातचीत 2015 से चल रही थी, पर मामला अधर में था। इस साल उसे मंजूरी मिल गई। भारतीय विदेश मंत्री के दौरे के पहले वहां की विपक्षी पार्टियों एसजेबी और जेवीपी ने सरकार पर यह कहते हुए तीखे हमले किए कि उसने भारत से मिलने वाली आर्थिक मदद के बदले अपने सामुद्रिक और वायु संप्रभुता के साथ समझौता किया है। इसके अलावा कांकेसनथुरई बंदरगाह पर हवाई अड्डे के निर्माण संबंधी भारतीय प्रस्ताव और श्रीलंकाई संविधान में तमिल अल्पसंख्यकों को और अधिक अधिकार दिए जाने संबंधी भारत के अनुरोध पर श्रीलंका ने जिस तरह सकारात्मक संकेत और आश्वासन दिया है वह भी मौसम बदलने का सूचक है। इस बदलते मौसम पर चीन की भी नजदीकी निगाह होगी लेकिन भारतीय राजनय को इसे स्थायी, निरंतरतापूर्ण और दीर्घायु बनाने की कोशिशें लगातार जारी रखनी होंगी।

इसे एक ऐसे कूटनीतिक अभियान का महत्वपूर्ण चरण माना जा रहा है, जिसके जरिए भारत ने श्रीलंका में चीन के बरक्स अपनी मौजूदगी और मजबूती में निर्णायक बढ़त हासिल की है।

# भारत को बढ़त

हर्ष सिन्हा।।

भारतीय विदेश मंत्री डॉक्टर एस जयशंकर की श्रीलंका यात्रा दोनों देशों के बीच आपसी संबंधों के नजरिए से काफी सफल रही है। दोनों विदेश मंत्रियों ने आधा दर्जन महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं और श्रीलंका के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को भारतीय विदेश मंत्री ने आश्वस्त किया है कि आर्थिक संकट से निपटने में भारत श्रीलंका को निरंतर सहयोग करता रहेगा। द्विपक्षीय संबंधों में राष्ट्राध्यक्षों या विदेश मंत्रियों के दौरों में समझौतों, सहमतिपत्रों और प्रतिबद्धताओं की ऐसी मुखर अभिव्यक्तियां सामान्य बात मानी जाती हैं, लेकिन इस दौरे को कई कारणों से कुछ विशेष अहमियत दी जा रही है। इसे एक ऐसे कूटनीतिक अभियान का महत्वपूर्ण चरण माना जा रहा है, जिसके जरिए भारत ने श्रीलंका में चीन के बरक्स अपनी मौजूदगी और मजबूती में निर्णायक बढ़त हासिल की है।

उदाहरण के तौर पर, जाफना के 3 द्वीपों नैनातिवु, नेदुन्तिवु और अनालाईतिवु पर हाइब्रिड विद्युत परियोजनाएं शुरू करने को लेकर हुए समझौते का जिक्र किया जा सकता है। आपको याद होगा कि इन्हीं तीन द्वीपों पर ठीक ऐसी ही परियोजनाओं के लिए साल की शुरुआत में श्रीलंका ने चीन के साथ सहमतिपत्र पर हस्ताक्षर किए थे। तब भारत ने यह कहते हुए इस पर



एतराज दर्ज कराया था कि भारत भूमि से निकट के इन इलाकों में चीन की मौजूदगी उसकी 'चिंताएं बढ़ाने वाली' है । इसके बाद श्रीलंका ने इन परियोजनाओं को निरस्त कर दिया था। अब चूंकि यही परियोजनाएं भारत के सहयोग से शुरू हो रही हैं तो भारत की बढ़त को लेकर चर्चाएं स्वाभाविक हैं। वैसे भी पिछले कुछ समय में दोनों देशों में संबंध और सहयोग के क्षेत्र में खासी प्रगाढ़ता आई है। पिछले एक पखवाड़े में पहले श्रीलंकाई वित्त मंत्री बासिल राजपक्षे की भारत यात्रा और अब भारतीय विदेश मंत्री की श्रीलंका यात्रा ने कई महत्वपूर्ण आर्थिक, राजनयिक और सामरिक सहमतियां कायम की हैं। इनकी अहमियत इसलिए बढ़ जाती है क्योंकि बीते एक दशक से भी ज्यादा समय से श्रीलंका में चीन का वर्चस्व अधिक रहा है। वर्ष 2009 में तमिल अलगाववादी आंदोलन खत्म होने के बाद अपनी खराब वित्तीय स्थिति को ठीक करने के लिए श्रीलंका ने चीन की ओर कदम बढ़ाया था। कर्ज और मदद की मिली–जुली पेशकशों के बीच 2014 में शी चिनफिंग ने श्रीलंका का दौरा भी किया था। उस वक्त भी यह आशंका जताई गई थी कि यह सब चीन की श्रीलंका को कर्ज के जाल में फंसा कर रणनीतिक फायदे उठाने की कूटनीति है। यह आशंका 2017 में तब सच साबित हुई, जब कर्ज न चुका पाने के कारण श्रीलंका को सामरिक दृष्टि से बेहद अहम हंबनटोटा बंदरगाह चीन को 99 साल की लीज पर दे देना पड़ा। यह पहला बड़ा मौका था, जब श्रीलंका में प्रायः सभी स्तरों पर चीनी मदद के पीछे असली खेल को लेकर चिंताएं मुखर हुईं और इसे लेकर भविष्य में सतर्क और संतुलित रुख अपनाने की जरूरत महसूस की गई। लेकिन एक के बाद एक कई वजहों से श्रीलंका अभूतपूर्व आर्थिक बदहाली की ओर बढ़ता चला गया। स्थिर आय स्रोत के अभाव वाले इस देश की अर्थव्यवस्था काफी हद तक पर्यटन, चाय और कपड़ा उद्योग पर टिकी थी, जिसे कोविड–19 ने बुरी तरह तबाह कर दिया। विदेशी मुद्रा भंडार लगभग खाली हो गया और क्रेडिट रैंकिंग के लगातार गिरते जाने से विदेशी निवेशकों से कर्ज मिलना मुश्किल हो गया। ऐसे मौके पर भारत ने श्रीलंका को आर्थिक सहायता देकर न केवल मानवीय बल्कि कूटनीतिक दृष्टि से भी एक निर्णायक बढ़त हासिल की।

### सुडोकु-कालम- 5212

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 4 | | 6 | | | |
| | | | | | 2 | 7 | | |
| | 6 | 8 | | | | 9 | | |
| 5 | 3 | | | | | | | 6 |
| | | | | 6 | | | | |
| 7 | | | | | | | 9 | 2 |
| | | 9 | | | | 8 | 5 | |
| | | 2 | 1 | | | | | |
| | | | 3 | | 4 | | | |

सुडोकु-कालम -5211 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 9 | 7 | 1 | 3 | 6 | 4 | 8 | 5 |
| 3 | 1 | 6 | 5 | 8 | 4 | 2 | 9 | 7 |
| 5 | 4 | 8 | 7 | 9 | 2 | 6 | 3 | 1 |
| 9 | 2 | 1 | 4 | 7 | 3 | 8 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 3 | 6 | 1 | 5 | 9 | 2 | 4 |
| 4 | 6 | 5 | 9 | 2 | 8 | 1 | 7 | 3 |
| 1 | 7 | 4 | 2 | 5 | 9 | 3 | 6 | 8 |
| 6 | 3 | 2 | 8 | 4 | 7 | 5 | 1 | 9 |
| 8 | 5 | 9 | 3 | 6 | 1 | 7 | 4 | 2 |

## अपना ब्लॉग

### विकास की कई अहम परियोजनाएं

**मोहन।** इस साल की शुरुआत से अब तक भारत श्रीलंका को 2.4 अरब डॉलर की आर्थिक सहायता दे चुका है और दोनों देशों के बीच विकास की कई अहम परियोजनाएं भी शुरू हुई हैं। इनमें जाफना के तीन द्वीपों वाले हाइब्रिड पावर प्रोजेक्ट के अलावा त्रिंकोमाली में आयल टैंक फार्म, सोलर एनर्जी प्लांट और समुद्री राहत बचाव समन्वय और निगरानी केंद्र की स्थापना प्रमुख है। भारत के अडानी समूह ने भी उत्तरी श्रीलंका में दो अक्षय ऊर्जा संयंत्रों के लिए 50 करोड़ डॉलर की परियोजना पर काम शुरू किया है। जरूरी खाद्य पदार्थों, तेल और गैस जैसे पेट्रोलियम उत्पादों की भयंकर किल्लत के चलते अब आर्थिक संकट से मानवीय त्रासदी की ओर बढ़ रहे श्रीलंका में भारत की आर्थिक मदद की जनता और मीडिया में सराहना हुई है, लेकिन इससे श्रीलंका में चीनी हितों के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से काम करने वाली लॉबी के कान भी खड़े हो गए हैं। त्वरित प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए 29 मार्च को श्रीलंका के रक्षा मंत्रालय ने इसका खंडन किया और कहा कि इस समुद्री सुरक्षा समझौते से श्रीलंका की राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभुता पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ेगा।